लोग अगर आपकी तारीफ करते हैं तो यह आपकी काबिलियत है, और लोग अगर आपसे जलते हैं तो यह आपका जलवा है..

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 17 अंक : 14 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 17 अप्रैल से 23 अप्रैल, 2025 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

मुख्यमंत्री योगी के फैसले से आउटसोर्स कर्मचारियों को होगा फायदा, अब अपने जिले में कर सकेंगे काम

लखनऊ(संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़ा फैसला लेते हुए आउटसोर्स कर्मचारियों को राहत दे दी है। परिवहन निगम में कार्यरत आउटसोर्स कर्मचारियों के जरिए नियुक्त परिचालकों का भी ट्रांसफर हो सकेगा। परिचालकों की सुविधा, निगम की कार्यक्षमता और राजस्व में बढ़ोतरी की दिशा में उठाया गया है, जिससे बेहद महत्वपूर्ण काम हो सकेगा। परिवहन राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार दयाशंकर सिंह ने बताया कि वर्तमान व्यवस्था के मुताबिक परिचालकों की नियुक्ति जहां होती है उन्हें उस स्थान पर ही सेवाएं देनी होती है। मगर अब ऐसे परिचालक जो कम से कम छह महीने की सेवा दे चुकें हैं और

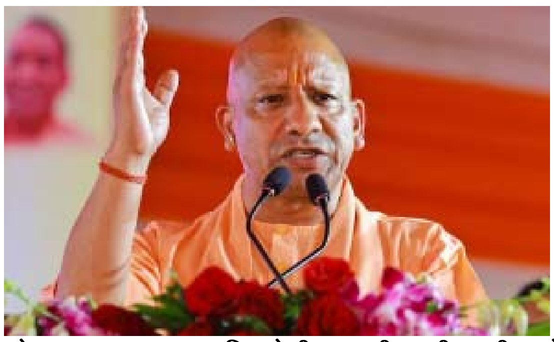

30 हजार किलोमीटर की दूरी तय कर चुके है उनका ट्रांसफर आपसी सहमति से हो सकता है। ऐसे में दूरदराज के क्षेत्रों में तैनात परिचालक अपने गृह जनपद या उसके पास के स्थान पर भी सर्विस दे सकेंगे। इससे उन्हें छुट्टियां भी कम लेनी होंगी जिससे गाड़ी परिचालन में समस्या नहीं होगी। इस संबंध में परिवहन मंत्री का कहना है कि परिचालकों की नियमित उपलब्धता होने से वर्किंग दिनों की संख्या में इजाफा होगा। बसों की संख्या भी बढ़ेगी जिससे यात्रियों को आसानी होगी। इससे परिवहन विभाग की आय भी बढ़ेगी। यात्रियों को समय से और नियमित रूप से बसें मिलेंगी, जिससे विभाग पर भी यात्रियों का भरोसा जागेगा। योगी सरकार का यह फैसला परिचालकों और जनता के लाभ के लिए है।

जयशंकर का विदेशी राजदूतों से पूर्वोत्तर को जानने, इसकी खूबियों को अपनी सरकारों से साझा करने का आग्रह

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि पूर्वोत्तर भारत की प्रासंगिकता समय के साथ बढ़ेगी, साथ ही उन्होंने विदेशी राजदूतों से उस क्षेत्र को देखने ,समझने और अपनी सरकारों तथा उद्योग जगत के साथ क्षेत्र की खासियत को साझा करने का आग्रह किया। पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (डीओएनईआर) द्वारा आयोजित होने जा रहे 'पूर्वोत्तर निवेशक शिखर सम्मेलन 2025' के लिए राजदूतों की एक बैठक को डिजिटल माध्यम से संबोधित करते हुए जयशंकर ने मंगलवार को कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र कई प्रमुख

भारतीय नीतियों – 'पड़ोसी प्रथम', 'एक्ट ईस्ट' या 'बंगाल की खाड़ी बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल' (बिम्सटेक) के केंद्र में है। उन्होंने कहा, ''पूर्वोत्तर हमारे पांच पड़ोसियों से जमीन से जुड़ा हुआ है, इसकी सीमाएं भारतीय उपमहाद्वीप और 'आसियान' (दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन) देशों से जुड़ी हैं।'' विदेश मंत्री ने कहा कि भारत के निकटतम पड़ोसियों से जुड़ी कई हालिया पहल इसी क्षेत्र से निकली हैं। उन्होंने कहा कि त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान परियोजना जैसी अन्य पहल भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा, ''हर मायने में यह एक केंद्र है, जिसकी प्रासंगिकता समय के साथ और बढ़ेगी।'' उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता दी है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, ''हम चाहते हैं कि आप इसकी कई खूबियों से परिचित हों और इसे अपनी सरकार और उद्योग जगत के साथ साझा करें। साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों में उनके साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दें।'' बाद में मंत्री ने राजदूतों के साथ बैठक के बारे में 'एक्स' पर पोस्ट किया। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार, पर्यटन केंद्र और वैश्विक कार्यस्थल में योगदानकर्ता के रूप में पूर्वोत्तर की बढ़ती प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

कांचा गचीबावली जंगल को काटने पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया, तेलंगाना सरकार को जमकर लगाई फटकार

नई दिल्ली। हैदराबाद के पास कांचा गाचीबोवली इलाके में बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई से

संबंधित एक स्वतः संज्ञान मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को तेलंगाना सरकार को कड़ी फटकार लगाई। व्यापक पर्यावरणीय क्षति की रिपोर्ट के बाद इस मुद्दे को अपने हाथ में लेने वाले न्यायालय ने राज्य की कार्रवाई पर सवाल उठाए और औचित्य के बजाय तत्काल बहाली उपायों पर जोर दिया। गहरी चिंता व्यक्त करते हुए, न्यायालय ने मौजूदा पेड़ों की सुरक्षा को छोड़कर, क्षेत्र में सभी गतिविधियों को रोक दिया और चेतावनी दी कि अनुपालन न करने पर सख्त परिणाम भुगतने होंगे। इससे पहले 3 अप्रैल को हुई सुनवाई के दौरान तेलंगाना उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार (न्यायिक) द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट में व्यापक वनों की कटाई दिखाई गई। सर्वोच्च न्यायालय ने निष्कर्षों की समीक्षा करने के बाद, पेड़ों को हटाने के पीछे की जल्दबाजी पर सवाल उठाया और राज्य सरकार से स्पष्टीकरण मांगा कि क्या उचित पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त की गई थी। अदालत ने विशेष रूप से इस बात पर जवाब मांगा कि क्या पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) प्रमाण पत्र जारी किया गया था और क्या इतने बड़े पैमाने पर विनाश करने से पहले वन अधिकारियों से अपेक्षित अनुमति ली गई थी। अदालत ने पूछा इन गतिविधियों को शुरू करने की क्या मजबूरी थी? इस बात पर जोर देते हुए कि क्षेत्र में मोर और अन्य वन्यजीवों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि यह एक वनाच्छादित आवास है।अदालत में पेश किए गए फोटोग्राफिक साक्ष्यों से पता चला कि लगभग 100 एकड़ में भारी मशीनरी तैनात करके जमीन के बड़े हिस्से को साफ कर दिया गया। अदालत का निर्देश स्पष्ट था: अगले आदेश तक, क्षेत्र में सभी गतिविधियाँ बंद होनी चाहिए, और इसका पालन न करने पर मुख्य सचिव को व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया को बड़ा झटका!

नई दिल्ली(संवाद सूत्र)। जन प्रतिनिधियों के लिए विशेष अदालत ने लोकायुक्त पुलिस को मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (मुडा) मामले में अपनी जांच जारी रखने का आदेश दिया। अदालत ने लोकायुक्त पुलिस द्वारा प्रस्तुत 'बी रिपोर्ट' पर अपना निर्णय स्थगित कर दिया, जिसमें सिद्धारमैया को किसी भी गलत काम से मुक्त कर दिया गया था। इसने पुलिस को निर्देश दिया कि कोई भी निर्णय लेने से पहले एक व्यापक अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। बी रिपोर्ट को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और कार्यकर्ता स्नेहमयी कृष्णा ने चुनौती दी थी, जिन्होंने क्लीन चिट पर सवाल उठाए और अदालत से इसे खारिज करने का आग्रह किया। अदालत ने सोमवार के लिए अपना आदेश सुरक्षित रख लिया था, लेकिन जांच अभी भी अधूरी होने के कारण मामले की सुनवाई अब 7 मई तक के लिए स्थगित कर दी गई है। अपने आदेश में न्यायालय ने स्पष्ट किया कि ईडी के पास बी रिपोर्ट पर आपत्ति याचिका दायर करने का अधिकार है और वह एक पीड़ित पक्ष के रूप में ऐसा कर सकता है। लोकायुक्त पुलिस, जिसने अपनी जांच जारी रखने के लिए न्यायालय से अनुमति मांगी थी, को अब औपचारिक रूप से आगे बढ़ने की मंजूरी दे दी गई है।

तेज धूप और बढ़ता तापमान आंखों के लिए भी ठीक नहीं, डॉक्टर से जानिए कैसे करें आंखों की देखभाल

देशभर में बढ़ती गर्मी के साथ कई प्रकार की बीमारियों का भी खतरा बढ़ गया है। जैसे–जैसे पारा बढ़ता जा रहा है, ये स्थिति स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को भी बढ़ाती जा रही है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, लगातार धूप–गर्मी के संपर्क में रहने वाले, हीटस्ट्रोक के शिकार लोगों में लिवर–किडनी, हाई ब्लड प्रेशर और शुगर बढ़ने का जोखिम हो सकता है। इसके अलावा गर्मी का ये मौसम आपकी आंखों के लिए भी समस्याएं बढ़ाने वाला हो सकता है। धूप और गर्मी का आपकी आंखों पर कई तरह से असर हो सकता है, मुख्य रूप से सूरज की रोशनी के संपर्क, उच्च तापमान के कारण एलर्जी, ड्राई आइज, फोटोकेराटाइटिस, एलर्जिक कंजंक्टिवाइटिस और आंखों में थकान की समस्या हो सकती है।

आंखों की समस्याएं

आजकल स्क्रीन ज्यादा देखने से लोगों को कम उम्र में ही आंखों की समस्याएं होने लगी हैं। मोबाइल, लैपटॉप के अधिक इस्तेमाल से देखने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है साथ ही आंखें कमजोर भी होने लगती हैं। इसके अलावा कुछ लोग आंखों को गलत तरीके से धोते हैं, जिससे आंखों से जुड़ी अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। गर्मी के दिनों में आंखें धोने से जलन और सूजन में काफी आराम मिलता है। हालांकि अगर आप गर्मी में ठंडे पानी से आंखें धो रहे हैं तो इसके लिए पहले सही तरीका जान लेना अच्छा होता है।

आंखों को सही तरीके से धोना जरूरी

गलत तरीके से आंखों को धोना कई बार नुकसानदायक भी हो सकता है। अगर आप आंखों को धो रहे हैं तो इसके लिए आंखों को बंद करके उसके ऊपर से ठंडे पानी के छींटे मारने चाहिए। इससे आंखों पर चोट नहीं लगती है। इसके लिए सिर को सिंक या पीछे की ओर न करते हुए थोड़ा सा झुककर आंखों को धोना चाहिए। इसके बाद आंखों को धीरे–धीरे करके खोलें और किसी साफ कपड़े से पोछें।

कई बार ठंडे पानी के छीटे आंखों में जाने से आंखों में मौजूद टिशू प्रभावित हो सकते हैं।

इसके साथ ही आंखों को धोने से पहले आपको हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिए।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ?

नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुराग नरूला कहते हैं, आंखों को धोने के लिए बहुत ठंडा या गरम पानी इस्तेमाल करने से बचें। अगर आंखों पर मेकअप लगा है, तो पहले मेकअप रिमूवर का इस्तेमाल करें। आंखों को बहुत ज्यादा रगड़ने से बचना चाहिए। गर्मी के दिनों में आंखों में लालिमा, जलन और एलर्जी की दिक्कत हो सकती है। अगर आप इस तरह की किसी भी समस्या से परेशाअ हैं तो डॉक्टर से मिलकर कोई आई ड्रॉप ले सकते हैं। बिना डॉक्टरी सलाह के आंखों में कोई भी दवा डालने से बचें।

गर्मियों में ठंडक पाने के लिए खाएं ये आइसक्रीम, 30 मिनट में हो जाती हैं तेयार

बच्चे हों या बड़े, सभी को आइसक्रीम खाने का शौक होता है। यह मीठा खाद्य पदार्थ दूध, क्रीम और तरह–तरह के फ्लेवर का संयोजन होता है, जो शरीर को ठंडक पहुंचाता है।

बाजार में मिलने वाली आइसक्रीम में मिलावट की जाती है और उसमें दूध के नाम पर पाम ऑयल मिला दिया जाता है। ऐसे में आपको अपने घर पर ही ये लजीज आइसक्रीम बना लेनी चाहिए, जिनकी रेसिपी बेहद आसान हैं।

ये 30 मिनट में तैयार हो जती हैं।

कुकी एंड क्रीम आइसक्रीम

सामग्रीः आधा कप चीनी, एक कप दूध, 2 कप क्रीम, एक चम्मच वेनिला का अर्क, आधा चम्मच नमक और एक पैकेट ओरियो बिस्कुट।

विधिः कुकी एंड क्रीम आइसक्रीम बनाने के लिए सबसे पहले एक कटोरे में क्रीम, दूध, चीनी, नमक और वेनिला का अर्क डालें। इन सभी सामग्रियों को मिलाएं।

इसे ढककर रातभर के लिए फ्रीज कर लें। अगली सुबह आइसक्रीम मेकर में इस मिश्रण को डालें और उसमें हाथों से तोड़े हुए ओरियो बिस्कुट के टुकड़े भी मिला दें।

आम और केले की आइसक्रीम

सामग्रीः 2 बड़े आम, 2 केले, आधा कप कंडेंस्ड दूध, आधा कप क्रीम और एक चम्मच चीनी।

विधिः आम और केले की आइसक्रीम बनाने के लिए केले और आम को टुकड़ों में काट लें और एयर टाइट बैग में भरकर फ्रीज कर लें।

इन्हें ब्लेंडर में डालें और कंडेंस्ड दूध, क्रीम और चीनी के साथ पीस लें। इस मिश्रण में केले और आम के छोटे–छोटे टुकड़े भी डालें और रातभर के लिए फ्रीज करें।

जमने के बाद आनंद लेकर खाएं।

नारियल की आइसक्रीम

सामग्रीः व्हीपिंग क्रीम, 2 कप नारियल की मलाई, कंडेंस्ड दूध, नारियल का दूध, घिसा नारियल।

विधिः नारियल की आइसक्रीम तैयार करने के लिए सबसे पहले एक कटोरे में व्हीपिंग क्रीम को डालें। अब इसे विस्कर की मदद से तब तक फेटें जब तक इसकी स्थिरता मक्खन जैसी न हो जाए।

ब्लेंडर में नारियल की मलाई को पीसें और क्रीम में मिला दें। इसके बाद इसमें कंडेंस्ड दूध और नारियल का दूध मिलाएं और ऊपर से घिसा नारियल छिड़ककर फ्रीज करें।

पुदीने और चॉकलेट चिप की आइसक्रीम

सामग्रीः एक कप क्रीम, एक कप पुदीने की पत्तियां, आधा कप सफेद चॉकलेट, आधा चम्मच पुदीने का अर्क, 3 चम्मच चॉकलेट चिप्स और एक कप व्हीपिंग क्रीम।

विधिः इस अनोखी आइसक्रीम को बनाने के लिए सबसे पहले क्रीम और पुदीने की पत्तियों को उबाल लें। इस मिश्रण को छानें और पुदीने की पत्तियों को मिक्सी में पीस लें।

अब क्रीम में सफेद चॉकलेट, पुदीने का पेस्ट, पुदीने का अर्क, व्हीपिंग क्रीम और चॉकलेट चिप्स मिलाकर जमा लें।

चेरी आइसक्रीम

सामग्रीः चेरी, चीनी और एक कप दूध।

विधिः चेरी आइसक्रीम बनाने के लिए चेरी को मोटा–मोटा काटकर पीस लें। अब इसमें चीनी और दूध मिलाएं और तेज गति पर 5 मिनट फेटें।

इस तैयार मिश्रण को एक बड़े बर्तन में निकालें और 4 घंटे या रातभर के लिए जमने दें। ताजी चेरी को आप फ्रीज करके भी रख सकते हैं।

इसके लिए पहले इन्हें धोएं, फिर सुखाएं और एक एयरटाइट कंटेनर में लंबे समय तक फ्रीज करें।

पेंटिंग का शौक अपनाना चाहते हैं तो ऐसे करें शुरुआत, आपकी कला में होगा सुधार

बचपन में स्कूल में पेंटिंग और आर्ट की क्लास हुआ करती थी, जिसमें नए–नए चित्र बनाना और उनमें रंग भरना सिखाया जाता था।

कुछ छात्र इस कला में अच्छे हुआ करते थे और बेहद खूबसूरत पेंटिंग्स बनाया करते थे। हालांकि, बड़े होने के बाद उनका शौक कहीं खो–सा गया और वे अपने–अपने जीवन में व्यस्त हो गए।

अगर आप भी पेंटिंग के शौक को दोबारा अपनाना चाहते हैं और इस कला में पारंगत होना चाहते हैं तो ये टिप्स अपनाएं।

सही रंगों का चुनाव करें

पेंटिंग की कला की नीव रंगों पर ही टिकी होती है। ज्यादातर लोग मानते हैं कि सभी कलाकारों को सीधे पेंट कलर से ही पेंटिंग करना शुरू करना चाहिए।

हालांकि, अगर आप इस कला को सीखना शुरू कर रहे हैं तो आप ऑयल पेस्टल या पेंसिल वाटर कलर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

आप अपनी पसंद और सहुलियत के मुताबिक, वाटर, एक्रेलिक, पेस्टल या ऑयल पेस्टल जैसे तमाम रंगों में से चुनाव कर सकते हैं।

हर चीज में कला और आकार देखने की कोशिश करें

पेंटिंग एक रचनात्मक गतिविधि है, जिसके लिए कलाकार का नजरिया बेहद मायने रखता है। अगर आप इस कला को अपनाना चाहते हैं तो आपको हर चीज में कला ढूंढनी होगी।

इसके लिए कोशिश करें कि आप जिस भी वस्तु या व्यक्ति को देखें, आपको उसमें कोई आकार या कलात्मक छवि दिखाई दे। ऐसा करने से आपको चित्र बनाने में आसानी होगी, आपकी रचनात्मकता बढ़ेगी और आप अपनी कला में सुधार भी कर पाएंगे।

चित्रकारी करने का नियमित अभ्यास करें

पेंटिंग करने से पहले आपको ड्राइंग बनाना यानी कि चित्रकारी करना सीखना होगा। इसके लिए पेंसिल और कागज उठाएं और अपनी सोच व रचनात्मक क्षमताओं के आधार पर चित्र बनाना शुरू करें।

रोजाना एक नया चित्र बनाने की कोशिश करें या एक हफ्ते का समय लेकर एक ही चित्र को उत्तम बनाने का प्रयास करें।

चित्रकारी के नियमित अभ्यास से आपका कौशल विकसित होगा और आप दिन–पर–दिन बेहतर होते जाएंगे। साथ ही, इससे आप अधिक रचनात्मक बनेंगे।

कलर थ्योरी के बारे में जानें

अगर आप एक अच्छे पेंटर बनना चाहते हैं तो कलर थ्योरी यानि रंग सिद्धांत समझना आपके लिए महत्वपूर्ण है। इसके लिए सबसे पहले पीले, नीले और लाल रंगों को एक साथ मिलाने से शुरुआत करें।

ये प्राइमरी रंग होते हैं, जिनसे सभी अन्य रंग बनाए जा सकते हैं। इन्हें मिलाने के बाद सेकंडरी रंग बनते हैं, जिनमें हरा, नारंगी और बैंगनी आदि शामिल होते हैं।

इनके साथ–साथ आपको कंटेम्परोरी रंगों के बारे में भी सीखना चाहिए।

रंग भरने की कला को सीखें

एक बार जब आप चित्रकारी में पारंगत हो जाएं और आपको कलर थ्योरी का ज्ञान हो जाए, तो चित्रों में रंग भरना शुरू कर दें।

इसके लिए सबसे पहले अपने चित्र में बेस रंग भरें और उसकी नीव तैयार कर लें। इसके बाद लाइट और शैडो तकनीक की मदद से चित्र में शेडिंग करें।

पेंटिंग करते समय इस बात पर ध्यान देना भी जरूरी होता है कि आप ब्रश को किस तरह से इस्तेमाल कर रहे हैं।

राम मंदिर के तीनों तल का निर्माण कार्य पूरा

अयोध्या (संवाददाता)। देश–दुनिया के रामभक्तों के लिए बड़ी खुशखबरी है। राम मंदिर के तीनों तल का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। शिखर का काम भी पूरा हो चुका है। दिसंबर 2025 तक मंदिर समेत अन्य प्रकल्पों का निर्माण पूरा करने का लक्ष्य है। राम मंदिर के तीनों तल बनकर तैयार हो गए हैं। पत्थरों का काम पूरा हो चुका है। यह जानकारी मंगलवार को राम मंदिर भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने दी। उन्होंने बताया कि अब राम मंदिर के आसपास सिर्फ दो हजार क्यूबिक फीट पत्थर और लगने बाकी हैं। पहले तल पर जल्द ही राम दरबार की भी स्थापना कर ली जाएगी। दिसंबर के आखिरी तक राम मंदिर का सारा काम पूरा हो जाएगा। अब परकोटा के निर्माण कार्यों पर ध्यान दिया जा रहा है।

नृपेंद्र ने बताया कि परकोटा के निर्माण का काम तेज किया जाएगा। परकोटा के छह मंदिरों के कलश का भी पूजन हो चुका है। 30 अप्रैल तक परकोटा के सभी छह मंदिरों पर कलश स्थापित कर दिया जाएगा। रामकथा संग्रहालय के निर्माण कार्य की भी समीक्षा की गई है। प्रयास है कि अगले तीन महीने में संग्रहालय की कम से कम पांच गैलरी तैयार हो जाए, जिससे श्रद्धालु उसका भी दर्शन कर सकें। राम मंदिर भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष ने बताया कि सप्त मंडपम की सातों मूर्तियां अयोध्या पहुंच चुकी हैं। इन मूर्तियों को मंदिरों में स्थापित भी कर दिया गया है। सप्त मंडपम के मंदिरों में महर्षि वशिष्ठ, वाल्मीकि, विश्वामित्र, अगस्तय, निषाद राज, शबरी व माता अहिल्या की मूर्तियां हैं। इन सभी मूर्तियों की ऊंचाई साढ़े तीन फीट है। छह मूर्तियां बैठी हुई मुद्रा में बनाई गई हैं। निषाद राज की मूर्ति खड़ी मुद्रा में निर्मित की गई है। सप्त मंडपम के बीच कुंड का भी निर्माण पूरा कर लिया गया है।

बदलेगा रामलला के सुगम दर्शन का मार्ग

अयोध्या (संवाददाता)। रामलला के श्रद्धालुओं को धूप से बचाने के उपाय राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से शुरू कर दिए गए हैं। इसी क्रम में रामलला के दर्शन मार्ग पर स्थायी कैनोपी लगाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इसके चलते श्रद्धालुओं के दर्शन मार्ग में भी बदलाव किए जाने की तैयारी है। सुगम दर्शन का मार्ग कुछ दिनों तक बदला रहेगा। रामलला के दर्शन पथ पर बैगेज स्कैनर से लेकर परकोटा के प्रवेश द्वार तक स्थाई कैनोपी लगाई जाने लगी है। इसके लिए स्ट्रक्चर खड़ा किया जा रहा है। अन्य उपकरण व मशीन का प्रयोग भी किया जाना है। यह दर्शन का मुख्य मार्ग है। इसको देखते हुए दर्शन की व्यवस्था में कुछ बदलाव किया जा रहा है। व्यवस्था में बदलाव को लेकर राम मंदिर के ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्र व एसपी सुरक्षा बलरामाचारी दुबे ने दर्शन मार्ग का निरीक्षण भी किया। एसपी सुरक्षा ने बताया कि छाजन लगाने के चलते दर्शन मार्ग करीब एक पखवाड़े तक बाधित रहेगा। सुगम दर्शन मार्ग में बदलाव किया जाएगा। सुगम पास धारकों को भी अब रंग महल यानी गेट नंबर दो से ही प्रवेश दिया जाएगा। व्हील चेयर से जाने वाले श्रद्धालु भी अब रंग महल बैरियर से ही मंदिर में प्रवेश कर पाएंगे। दो–तीन दिनों में नई व्यवस्था लागू हो जाएगी। एसपी सुरक्षा के अनुसार अभी तक रंग महल यानी गेट नंबर दो से केवल विशिष्ट पास धारकों को ही प्रवेश दिया जाता है। रोजाना तीन हजार से अधिक श्रद्धालु सुगम व विशिष्ट पास के जरिये दर्शन करते हैं। राम मंदिर की सुरक्षा की मॉडर्न कंट्रोल रूम से 24 घंटे निगरानी की जाती है। रात में भी निगरानी बढ़ा दी गई है।

महिला से लाखों की टप्पेबाजी करने वालों का नहीं मिला सुराग

अंबेडकरनगर। टांडा कोतवाली से चंद दूरी पर महिला से लाखों रुपये के जेवरात की टप्पेबाजी करने वाला शातिर अपराधी है। अब वे विदेश भागने की फिराक में हैं। पुलिस सूत्रों की माने तो इनके तार लंबे गैंग से जुड़े हो सकते हैं। बाद पुलिस ने अयोध्या, लखनऊ, गोरखपुर एअरपोर्ट पर निगरानी बढ़ा दी है। अलीगंज के अलहदादपुर मोहल्ला निवासी तमकीन इम्तियाज आठ अप्रैल की सुबह 10 बजे ई रिक्शे से बसखारी जा रहीं थीं। हयातगंज के बकरहवा पुल के पास पहुंची थीं। तभी पीछे से बुलेट से आए दो युवकों ने ई रिक्शा रोक लिया था और महिला को बहलाकर हाथ से कंगन व ब्रेसलेट के अलावा सोने की चेन निकलवा ली थी। इसके बाद कागज की पुड़िया बनाकर उन्हें वापस कर दी। इसके बाद दोनों बदमाश बस्ती की ओर भाग निकले थी। अब तक हुई जांच में अपराधियों को चिह्नित तो किया जा चुका है, लेकिन गिरफ्त से दूर हैं। खुफिया पुलिस ने जरा सी चूक की तो दोनों पुलिस की पकड़ से दूर निकल जाएंगे। सूत्रों के मुताबिक ये टप्पेबाज किसी बड़े गैंग से जुड़े हैं, और विदेश भी निकल सकते हैं। सीओ शुभम कुमार ने बताया कि जांच चल रही है। जल्द ही गिरफ्तारी कर ली जाएगी।

घायलों को ढाई घंटे भी नहीं संभाल पाया मेडिकल कॉलेज

बहराइच (संवाददाता)। मेडिकल कॉलेज के लोकार्पण के समय दावे किए गए थे कि अब गंभीर रूप से घायलों तथा बीमारों को इलाज के लिए लंबी दूरी नहीं तय करनी होगी। मेडिकल कॉलेज में ही दिल्ली व लखनऊ जैसे इलाज की सुविधाएं मिलेंगी, लेकिन मंगलवार को हुए हादसे ने इन दावों की पोल खोल दी। हादसे के बाद घायलों को यहां लाया गया तो सभी को स्ट्रेचर, बेड व ऑक्सीजन मुहैया कराने में मेडिकल कॉलेज प्रशासन के पसीने छूट गए। ढाई घंटे के अंदर ही सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद लखनऊ के ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया गया, जबकि यहां सभी विभागों में प्रोफेसर तैनात हैं। कहने को तो जिले में मेडिकल कॉलेज है। यहां उच्च चिकित्सा सुविधा के लिए प्रति वर्ष अरबों रुपये का बजट मिलता है। यही नहीं सभी विभागों में प्रोफेसर के साथ ही असिस्टेंट प्रोफेसर भी तैनात हैं, लेकिन एक हादसे ने पूरे मेडिकल कॉलेज की व्यवस्था की पोल खोल दी। एक के बाद एक यहां 14 घायल पहुंचे तो न तो स्ट्रेचर ढूंढे मिल रहा था न पर्याप्त मात्रा में बेड ही खाली मिल रहे थे। माइनर ओटी के फर्श पर लिटाकर घायलों का इलाज किया जा रहा था, जबकि सबकी सांस उखड़ रही थी और देखने से ही लग रहा था कि उन्हें ऑक्सीजन की जरूरत है।

ट्रेड वॉर के बीच चीन का अमेरिका पर पलटवार, ड्रैगन के इस फैसले से उड़ी ट्रंप की नींद; क्या है जिनपिंग की मंशा?

बीजिंग। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ की घोषणा के बाद बढ़ी ट्रेड वार पर चीन ने एक और पलटवार किया है। ड्रैगन ने अब दुर्लभ खनिजों और चुंबक के कई प्रकारों का निर्यात रोक दिया है। इससे दुनिया भर में ऑटोमोबाइल, एयरोस्पेस, सेमीकंडक्टर से जुड़े निर्माताओं के साथ सैन्य ठेकेदारों के लिए जरूरी कलपुर्जों की आपूर्ति ठप होने का खतरा मंडराने लगा है। इस कदम ने ट्रंप सरकार की चिंता बढ़ा दी है। चीन सरकार ने एक नई विनियामक प्रणाली का मसौदा तैयार किया है, जिसके चलते कारों से लेकर ड्रोन, रोबोट और मिसाइलों की असेंबलिंग के लिए जरूरी चुंबकों के निर्यात वाले जहाजों को चीनी बंदरगाहों पर ही रोक दिया गया है। इस नए मसौदे के लागू होते ही नई प्रणाली अमेरिकी सैन्य ठेकेदारों समेत चुनिंदा कंपनियों तक इन दुर्लभ चीजों की आपूर्ति को पूरी तरह रोक देगी। चीन का यह कदम बीते 12 अप्रैल को ट्रंप द्वारा टैरिफ में की गई जबर्दस्त बढ़ोतरी का सीधा और सख्त जवाब है। इससे पूर्व चार अप्रैल को चीन ने छह दुर्लभ खनिज पदार्थों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। दुर्लभ भू चुंबकों के साथ ये खनिज पदार्थ केवल चीन में ही परिष्कृत किए जाते हैं और इनमें से 90 प्रतिशत का उत्पादन चीन में ही होता है। अब धातुओं के साथ इनसे बनने वाले विशेष चुंबकों को विशेष निर्यात लाइसेंस द्वारा ही चीन से बाहर भेजा जा सकता है। वहीं, ट्रंप के प्रमुख आर्थिक सलाहाकार केविन हैसेट ने कहा कि चीन का यह कदम चिंताजनक है।

समय से पहले 116 शिक्षकों को दे दिया प्रोन्नत वेतनमान

अंबेडकरनगर (संवाददाता)। जिले के 38 सहायता प्राप्त विद्यालयों में तैनात 116 शिक्षकों को विनियमित करने के आदेश के बाद 12 साल की अवधि पूर्ण किए बिना ही प्रोन्नत वेतनमान दे दिया गया। इससे माध्यमिक शिक्षा विभाग को करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ है। इस पूरे खेल में विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत भी है। मामले में कई बार शिकायत हुई तो शासन ने वित्त नियंत्रक माध्यमिक शिक्षा को जांच सौंपी। टीम ने संबंधित शिक्षकों के दस्तावेज कब्जे में ले लिए हैं और जांच तेज कर दी है। अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में तदर्थ रूप से नियुक्त शिक्षकों को हटाए जाने की प्रक्रिया चल रही थी। मामले में न्यायालय के आदेश पर वर्ष 2000 से पूर्व नियुक्ति वाले तदर्थ शिक्षकों को 22 मार्च 2016 से विनियमित किया गया था। वर्ष 2000 के बाद नियुक्ति वाले तदर्थ शिक्षकों को निष्कासित कर दिया था। इन शिक्षकों का चयन वेतनमान 22 मार्च 2016 से ही अनुमन्य किया गया था। नियमतः चयन वेतनमान में 12 वर्ष की अनवरत संतोषजनक सेवा पूर्ण करने पर प्रोन्नत वेतनमान स्वीकृत किया जाना था। इसके बावजूद वर्ष 2016 में विनियमित होने के बाद इन शिक्षकों ने विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों से साठगाठ कर वर्ष 2017 से 2018 के बीच नियमों को दरकिनार कर तय अवधि से पूर्व ही प्रोन्नत वेतनमान स्वीकृत करवा लिया। साथ ही वास्तविक देय वेतन से अधिक वेतन का भुगतान करा रहे हैं। इस मामले में मई 2024 में एक शिकायत शासन से की गई थी। इसमें बताया गया था कि जिले के 38 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में तैनात 116 शिक्षक वर्षों से प्रोन्नत वेतनमान ले रहे हैं। कई सेवानिवृत्त भी हो चुके हैं। प्रतिवर्ष करीब 1.20 करोड़ रुपये का अतिरिक्त भुगतान किया जा रहा है, जिससे विभाग को करोड़ों रुपये की क्षति हुई है। इस मामले में वित्त नियंत्रक माध्यमिक शिक्षा निदेशालय प्रयागराज की ओर से जांच शुरू कराई गई है। नामित पर्यवेक्षक मदनलाल की अगुआई में टीमों ने शिक्षकों की नियुक्ति, विनियमितीकरण, चयन वेतनमान व प्रोन्नत वेतनमान से संबंधित पत्रावलियां अपने कब्जे में ली हैं। माना जा रहा है कि जल्द ही इस पूरे प्रकरण में कार्रवाई हो सकती है।

सम्पादकीय...

ईडी की कार्रवाई, राहुल–सोनिया के खिलाफ चार्जशीट दायर

प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की ओर से पहले गुरुग्राम जमीन घोटाले में राबर्ट वाड्रा से पूछताछ और फिर नेशनल हेराल्ड प्रकरण में सोनिया गांधी, राहुल गांधी समेत कुछ अन्य नेताओं के खिलाफ मनी लांड्रिंग के आरोप में चार्जशीट दायर किए जाने से कांग्रेस का भड़कना स्वाभाविक है, लेकिन इससे बात बनने वाली नहीं है, क्योंकि दोनों ही मामले गंभीर हैं। जहां प्रियंका गांधी के पति राबर्ट वाड्रा इस आरोप से दो–चार हैं कि उन्होंने छल–छद्म से जमीन खरीद और बेच कर करोड़ों कमाए, वहीं सोनिया और राहुल गांधी इस आरोप से घिरे हैं कि उन्होंने महज 50 लाख रुपये देकर नेशनल हेराल्ड, नवजीवन और कौमी आवाज जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन करने और हजारों करोड़ रुपये की संपत्ति के स्वामित्व वाली एसोसिएटेड जर्नल्स कंपनी को अपने मालिकाना हक वाली कंपनी यंग इंडिया के नाम कर लिया। यह प्रकरण आज का नहीं, 2012 का है। इस मामले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी की ईडी के समक्ष पेशी भी हो चुकी है। चूंकि यह पेशी अदालत के आदेश पर हुई थी, इसलिए यह कहना कठिन है कि उनके खिलाफ जो मामला चल रहा है, वह मनगढ़ंत है। तथ्य यह भी है कि इसी मामले में ये दोनों नेता जमानत पर चल रहे हैं। अभी चंद दिन पहले ईडी ने दिल्ली, मुंबई और लखनऊ में एसोसिएटेड जर्नल्स की संपत्तियों को जब्त करने की प्रक्रिया शुरू की थी। स्पष्ट है कि कांग्रेस नेताओं के यह कहने से काम चलने वाला नहीं है कि ईडी की ताजा कार्रवाई राजनीतिक बदले की भावना के तहत की गई। फिलहाल यह कहना कठिन है कि राबर्ट वाड्रा और साथ ही सोनिया एवं राहुल गांधी के मामलों का सच क्या है और अदालतें किस नतीजे पर पहुंचेंगी, लेकिन ईडी की कार्रवाई रुक–रुक कर होने पर अवश्य सवाल उठते हैं। ईडी नेशनल हेराल्ड मामले की जांच 2015 से कर रही है। इसके बाद से ईडी ने सोनिया और राहुल गांधी से पूछताछ करने से लेकर कई चरणों में एसोसिएटेड जर्नल्स की संपत्तियों को जब्त करने का काम किया है। पिछले कुछ वर्षों से इस मामले में ईडी शांत सी थी। अब उसने वाड्रा के साथ सोनिया–राहुल गांधी के मामले में एक ही दिन सक्रियता दिखाई। यह ठीक नहीं कि नेताओं अथवा उनके संबंधियों से जुड़े मामलों में इस तरह रुक–रुक कर कार्रवाई हो। नेताओं से जुड़े मामलों का निस्तारण तो प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। दुर्भाग्य से ऐसा होता नहीं। नेताओं के मामले वर्षों तक खिंचते रहते हैं। इसके चलते न केवल ईडी और सरकार के इरादों पर सवाल उठते हैं, बल्कि आर्थिक अपराध के आरोपों से घिरे नेताओं को यह कहने का अवसर मिलता है कि राजनीतिक कारणों से उन्हें परेशान किया जा रहा है। कुछ तो ऐसे आरोप लगाकर चुनावी लाभ भी उठाते हैं।

श्रीरामचरित मानस के वो चरित्र जो सबसे हे दृष्टि से देखे जाते हैं

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरित मानस विश्व में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तक है।इस पुस्तक को अनेकानेक लोग प्रतिदिन पढ़ते हैं।इसी पुस्तक को पढ़कर वैज्ञानिक डॉक्टर व्यास आदि मन माफिक धन अर्जित कर रहे हैं।इसी पुस्तक की कुछ चौपाइयों के अर्थ को अनर्थ बताकर कुछेक मूढ़ नेता गण अपनी दुकान भी चला रहे हैं।दुकान इसलिए चला पा रहे हैं, क्योंकि उन्हें सुनने वाले और सुनकर ताली बजाने वाले भी पढ़े लिखे मूढ़ ही होते हैं।जबकी ऐसी ज्ञानदायी पुस्तक न बनी है,न बन पा रही है और शायद भविष्य में भी न बनने की सम्भावना है।

इसी श्रीरामचरित मानस में कुछेक चरित्र ऐसे हैं,जो बहुत ही हे दृष्टि से देखे जाते हैं।देखे इसलिए जाते हैं कि जिस तरह से आज के नेता गण अपनी दुकान चलाने के लिए कुछ चौपाइयों का अर्थ गलत बताकर जन भावना को उद्वेलित करते हैं,वैसे ही कालांतर में उन चरित्रों के बारे में गलत बातें बताकर उनके बारे में प्रचारित कर हम सबके हिय में ठूँस ठूँस के भर दिया गया है।भरा इसलिए गया कि हमलोग पढ़ तो लिए,मगर उसपर मनन चिंतन नहीं किए।एक खास बात और है हम सबमें,हम सुन कर भरोसा करते हैं।मनन चिंतन की जहमत में पड़ते ही नहीं।हम कोई आकर कह दे कि कौवा कान ले गया तो,हम कौवा को खदेड़ लेंगे,मगर कान तपासने की जहमत नहीं उठायेंगे।इसीलिए उन महान चरित्रों के बारे में हम सब में भ्रांतियाँ भर दी गई। हे दृष्टि से देखने वाले चरित्र में सबसे पहला नाम भगवान श्री नारद जी का आता है।नारद जी के चरित्र को हम सबके मन एक चुगलखोर के रूप में स्थापित किया गया।जबकि नारद जी जैसा जन नायक और सर्व हितैषी आज तक कोई हुआ ही नहीं।नारद बिना डरे बेझिझक सत्य बोलते थे।उनकी कही बात कभी रद्द नहीं होती थी,इसीलिए नारद कहे जाते थे।वो किसी को किसी के द्वारा बिना कारण प्रताड़ित करता नहीं देख पाते थे।यदि कोई किसी के प्रति दुर्भावना लिए कुचक्र रचता था तो,नारद जी उसको सजग कर देते थे।नारद जी उस काल के एक मात्र विशुद्ध रूप से तब के पत्रकार थे।जो सत्य होता था वही कहते थे।आज के जैसा नहीं कि जिधर से धन मिले,उधर का बढ़ा चढ़ाकर प्रचारित व प्रसारित करो।वो हमेशा जो सही होता था,वही सूचना प्रसारित करते थे। दूसरा चरित्र जो सबसे अधिक बदनाम और हे दृष्टि से देखा जाता है,वह है भरत की माता कैकेयी जी।जिनके बारे में कहा जाता है कि यदि कैकेयी न होती तो श्रीराम जी के साथ सीता जी व लखन जी वन वन नहीं भकटते।यहाँ तक कि आज भी लोग किसी भी कन्या का नाम कैकेयी नहीं रखते।जब भी कोई दुष्ट प्रवृत्ति वाली विमाता पुत्र के साथ उल्टे सीधे व्यवहार करती है तो उसे कैकेयी की उपमा से पुरस्कृत किया जाता है।अब आप सब कहेंगे या सोंचेंगे खराब कार्य के लिए भी पुरस्कृत किया जाता है,तो मैं कहूँगा हाँ।क्योंकि श्रीरामचरित मानस में जितना बलिदान जनहित व देशहित के लिए कैकेयी ने दिया है,उतना किसी ने नहीं दिया है।कैकेयी जनहित के लिए वैधव्य स्वीकार किया,अपने ही पुत्र की घृणा झेली,समग्र देशवासियों की घृणा झेली,अपने सबसे प्रिय श्रीराम जी को वन भेजा।जिसके लिए मानव जाति की सबसे घृणित महिला का चरित्र बन गईं।उनकी बुराई को खूब प्रचारित व प्रसारित किया गया।मगर उनकी जनहित व देशहित की भावना को रसातल में फेंक दिया गया।अब यहाँ सोंचने वाली बात यह है कि कैकेयी जिसे सबसे अधिक प्रेम देती थी।उसके लिए वनवास क्यों माँगा।माँगा भी तो केवल 14 वर्ष के लिए ही क्यों माँगा।आजीवन क्यों नहीं माँगा।वनवास माँगते समय तपस्वी वेश की शर्त क्यों रखी।यह सवाल जो हैं यही विचारणीय हैं।और यही दबा दिये गये।और गलत जो था वही प्रचारित व प्रसारित किया गया।अब यदि उसे भरत को राजा ही बनाना था तो 14 वर्ष के लिए ही क्यों?आजीवन क्यों नहीं।इस बात को जो समझ लेगा वो कभी भी कैकेयी को हे दृष्टि से नहीं देखेगा।बल्कि उनकी पूजा करेगा।कैकेयी जी ने श्रीराम जी को बड़ी सहजता से वन नहीं भेजा था।गोस्वामी जी ने इस बात को श्रीरामचरित में इंगित भी किया है।

ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं गोई।
चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई।

इसी चौपाई में कैकेयी की महानता छुपी है। गोस्वामी जी कहते हैं जिस समय कैकेयी ने श्रीराम जी के लिए वनवास माँगी थी,उस समय उसने उस पीड़ा को पीया था।जो पीड़ा चोरी का बच्चा पैदा करने में एक महिला बर्दास्त कर लेती है।और उसे फेंक देती है।क्योंकि कैकेयी के अलावां कोई नहीं जानता था कि श्रीराम के हाँथो ही रावण का वध होगा।मगर श्रीलंका व अयोध्या से समझौता होने के कारण अयोध्या का कोई राजा श्रीलंका पर सीधे हमला नहीं कर सकता।यदि श्रीराम राजा बन जायेंगे तो रावण वध नहीं होगा।यदि रावण वध नहीं होगा तो जनकल्याण नहीं हो पायेगा।इसलिए श्रीराम को वन जाना आवश्यक है।इसके लिए कैकेयी जी ने सबकुछ बलिदान करके रघुवंश की मर्यादा को और मजबूती दी।ऐसी वंदनीय को गलत तरीके से पेश कर उसे ऐसा बदनाम किया गया कि आज भी कुटिल महिला को कैकेयी जैसी महान महिला से उपमेयित किया जाता है।

ऐसे ही विभीषण के बारे में प्रचारित व प्रसारित किया गया।सुग्रीव को भी ऐसे ही भ्रातृद्रोही कहके घृणा का पात्र बनाया गया।जबकि वो क्यों भाई से विलग हुए उसे नहीं बताया जाता।ए दोनो पात्र इतनी सहजता से नहीं श्रीराम से जा मिले।इन चरित्रों की गहनता से चिंतन करने पर तब इनकी सच्चाई मिलती है।सुग्रीव बालि को देखकर खुशी से सिंहासन खाली कर दिया था।फिर भी बालि उसके जान का दुश्मन बन गया। यदि बालि सुग्रीव को अंगीकार कर लिया होता तो सुग्रीव आज बदनाम न होता।वैसे ही विभीषण को यदि रावण ने देश निकाला न दिया होता तो, वह भी वहीं श्रीलंका में ही रहता।और रावण के साथ वह भी देश के लिए बलिदान होता।लेकिन हम लोग एक पक्षीय बात को सुनकर मान लेते हैं और निर्णय दे देते हैं।दूसरे पक्ष की सुनने और समझने की जहमत ही नहीं उठाते।इसीलिए श्रीराचरित मानस के पुनीत चरित्र घृणित हो गये।और हे दृष्टि से आज भी देखे जाते हैं।इन उपरोक्त चरित्रों की महानता को देखने और समझने के लिए गहन चिंतन मनन की आवश्यकता है।

–पं.जमदग्निपुरी

रामचरितमानस- जानिये भाग-14 में क्या क्या हुआ

अच्छे भाव प्रेम से, बुरे भाव बैर से, क्रोध से या आलस्य से, किसी तरह से भी नाम जपने से दसों दिशाओं में कल्याण होता है। उसी परम कल्याणकारी राम नाम का स्मरण करके और श्री रघुनाथजी को मस्तक नवाकर मैं रामजी के गुणों का वर्णन करता हूँ।

श्री रामचन्द्राय नमः

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं

मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।

श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये

ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः

राम नाम की महिमा

श्रद्धेय श्री तुलसीदासजी कहते हैं---- हे मानव ! यदि तू अपने जीवन को प्रकाशमय बनाना चाहता है, तो रामनाम का सहारा ले।

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ

नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे६

श्री रामजी ने सुग्रीव और विभीषण दोनों को ही अपनी शरण में रखा, यह सब कोई जानते हैं, परन्तु नाम ने अनेक गरीबों पर कृपा की है। नाम का यह सुंदर विरद लोक और वेद में विशेष रूप से प्रकाशित है६६

राम भालु कपि कटुक बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा

नामु लेत भवसिन्धु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं

श्री रामजी ने तो भालू और बंदरों की सेना बटोरी और समुद्र पर पुल बाँधने के लिए थोड़ा परिश्रम नहीं किया, परन्तु नाम लेते ही संसार रूपी समुद्र सूख जाता है। सज्जनगण! आप मन में विचार कीजिए कि दोनों में कौन बड़ा है?

राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा

राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी६

सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती६

फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें

श्री रामचन्द्रजी ने कुटुम्ब सहित रावण को युद्ध में मारा, तब सीता सहित उन्होंने अपने नगर (अयोध्या) में प्रवेश किया। राम राजा हुए, अवध उनकी राजधानी हुई, देवता और मुनि सुंदर वाणी से जिनके गुण गाते हैं, परन्तु सेवक (भक्त) प्रेमपूर्वक नाम के स्मरण मात्र से बिना परिश्रम मोह की प्रबल सेना को जीतकर प्रेम में मग्न हुए अपने ही सुख में विचरते हैं, नाम के प्रसाद से उन्हें सपने में भी कोई चिन्ता नहीं सताती

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।

रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि

इस प्रकार नाम (निर्गुण) ब्रह्म और (सगुण) राम दोनों से बड़ा है। यह वरदान देने वालों को भी वर देने वाला है। श्री शिवजी ने अपने हृदय में यह जानकर ही सौ करोड़ राम चरित्र में से इस 'राम' नाम को साररूप से चुनकर ग्रहण किया है

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी

सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी

नाम ही के प्रसाद से शिवजी अविनाशी हैं और अमंगल वेष वाले होने पर भी मंगल की राशि हैं। शुकदेवजी और सनकादि सिद्ध, मुनि, योगी गण नाम के ही प्रसाद से ब्रह्मानन्द को भोगते हैं

नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू

नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू

नारदजी ने नाम के प्रताप को जाना है। हरि सारे संसार को प्यारे हैं, हरि को हर प्यारे हैं और आप (श्री नारदजी) हरि और हर दोनों को प्रिय हैं। नाम के जपने से प्रभु ने कृपा की, जिससे प्रह्लाद, भक्त के शिरोमणि हो गए

ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू

ध्रुवजी ने ग्लानि से विमाता के वचनों से दुःखी होकर सकाम भाव से हरि नाम को जपा और उस नाम के प्रताप से अचल अनुपम स्थान ध्रुवलोक प्राप्त किया। हनुमान्‍जी ने पवित्र नाम का स्मरण करके श्री रामजी को अपने वश में कर रखा है

अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई६

भावार्थः-नीच अजामिल, गज और गणिका (वेश्या) भी श्री हरि के नाम के प्रभाव से मुक्त हो गए। मैं नाम की बड़ाई कहाँ तक कहूँ, राम भी नाम के गुणों को नहीं गा सकते

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।

जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु६

कलियुग में राम का नाम कल्पतरु मन चाहा पदार्थ देने वाला है और कल्याण का निवास तथा मुक्ति का घर है, जिसको स्मरण करने से भाँग के समान निकृष्ट तुलसीदास तुलसी के समान पवित्र हो गया

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव बिसोका

बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू

केवल कलियुग की ही बात नहीं है, चारों युगों में, तीनों काल में और तीनों लोकों में नाम को जपकर सभी प्राणी और जीव शोकरहित हुए हैं। वेद, पुराण और संतों का मत यही है कि समस्त पुण्यों का फल श्री रामजी के नाम में ही है।

ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें

कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना

पहले (सत्य) युग में ध्यान से, दूसरे (त्रेता) युग में यज्ञ से और द्वापर में पूजन से भगवान प्रसन्न होते हैं, परन्तु कलियुग केवल पाप की जड़ और मलिन है, इसमें मनुष्यों का मन पाप रूपी समुद्र में मछली बना हुआ है अर्थात पाप से कभी अलग होना ही नहीं चाहता, इससे ध्यान, यज्ञ और पूजन सुचारु रूप से नहीं सकता

नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला६

राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता

ऐसे कराल (कलियुग के) काल में तो नाम ही कल्पवृक्ष है, जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों को नाश कर देने वाला है। कलियुग में यह राम नाम मनोवांछित फल देने वाला है, परलोक का परम हितैषी और इस लोक का माता-पिता है अर्थात परलोक में भगवान का परमधाम देता है और इस लोक में माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन और रक्षण करता है।

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू

कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू६

कलियुग में न कर्म है, न भक्ति है और न ज्ञान ही है, राम नाम ही एक आधार है। कपट की खान कलियुग रूपी कालनेमि के (मारने के) लिए राम नाम ही बुद्धिमान और समर्थ श्री हनुमान्‍जी हैं

राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।

जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल

राम नाम श्री नृसिंह भगवान है, कलियुग हिरण्यकशिपु है और जप करने वाले जन प्रह्लाद के समान हैं, यह राम नाम देवताओं के शत्रु (कलियुग रूपी दैत्य) को मारकर जप करने वालों की रक्षा करेगा

भायँ कुभायँ अनख आलस हूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ

सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथा

अच्छे भाव प्रेम से, बुरे भाव बैर से, क्रोध से या आलस्य से, किसी तरह से भी नाम जपने से दसों दिशाओं में कल्याण होता है। उसी परम कल्याणकारी राम नाम का स्मरण करके और श्री रघुनाथजी को मस्तक नवाकर मैं रामजी के गुणों का वर्णन करता हूँ।

हिमाचल प्रदेश के इस मंदिर में बांधकर रखा गया है कलश, महाभारत काल से जुड़ा है इसका इतिहास

हिमाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है, जहां पर अक्सर लोग घूमने-फिरने जाते हैं। लेकिन यहां पर ऐसे कई फेमस और प्राचीन मंदिर हैं, जिससे जुड़ी कई स्थानीय मान्यताएं और लोककथाएं मौजूद हैं। हिमाचल प्रदेश में एक हाटेश्वरी मंदिर है, जिसका इतिहास पांडवों से जुड़ा हुआ माना जाता है। जिसके साक्ष्य आज भी मंदिर में देखने को मिलते हैं। हालांकि इस मंदिर के बारे में काफी कम लोग जानते हैं। हिमाचल प्रदेश के शिमला से 130 किमी की दूरी पर हाटेश्ध्वरी माता का मंदिर है। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के पब्बर नदी के किनारे बसा एक प्राचीन गांव है। इस मंदिर में दूर-दूर से लोग दर्शन के लिए आते हैं। तो आइए जानते हैं इस मंदिर से जुड़े रोचक तथ्यों के बारे में...

कहां है ये मंदिर

हिमाचल प्रदेश के शिमला में जुब्बल-कोटखाई तहसील में माता हाटेश्वरी मंदिर स्थित है। यहां पर हाटकोटी मां की पूजा की जाती है। यहां के स्थानीय लोगों का मानना है कि देवी उनके सभी दुखों का निवारण करती हैं। वहीं मंदिर के गर्भगृह में मां हाटकोटी की एक विशाल मूर्ति है। जोकि महिषासुर का वध कर रही हैं। यही वजह है कि हाटकोटी मां को महिषासुर मर्दिनी के नाम से जाना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि मां का दाहिना पैर भूमिगत है। इसके साथ ही मंदिर परिसर में भगवान शिव का एक मंदिर भी स्थापित है।

जानिए क्यों बांधकर रखा जाता है कलश

बता दें कि मंदिर के प्रवेश द्वार के बाईं ओर विशाल कलश को जंजीर से बांधकर रखा जाता है। जिसको स्थानीय भाषा में चरू कहा जाता है। लोक मान्यताओं के मुताबिक जब भी पब्बर नदी में बाढ़ की स्थिति बनने लगती है, तो यह कलश काफी जोर-जोर से सीटियां भरता है और भागने की कोशिश करता है। जिसके वजह से मंदिर के कलश को जंजीर से बांधकर रखा जाता है। बताया जाता है कि मंदिर में एक और कलश भी हुआ करता है, जोकि भाग निकला। लेकिन मंदिर के पुजारी ने दूसरे कलश को पकड़ लिया और जंजीरों से बांध दिया।

महाभारत काल से जुड़ा है इतिहास

धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक इस मंदिर में स्थित कुछ स्मारक पांडवों द्वारा बनाए गए थे। पौराणिक मान्यता है कि अज्ञातवास के दौरान इस स्थान पर पांडवों का आना हुआ था। इस दौरान उन्होंने यहां पर कुछ समय बिताया था। जिसके प्रमाण आज भी मंदिर में देखने को मिलते हैं। दरअसल, मंदिर के अंदर पांच पत्थर से बने हुए छोटे मंदिर हैं, जिनको 'देवल' कहा जाता है। बताया जाता है कि इन्हीं के अंदर बैठकर पांडवों ने देवी की आराधना की थी।

'टाइगर जिंदा है...' सलमान खान के सपोर्ट में उतरे अक्षय कुमार, सिनेमा के सिकंदर के लिए कही ये बात

नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा के दो ऐसे अभिनेताओं के बारे में जिक्र किया जाए, जिनकी दोस्ती के किस्से जगजाहिर हैं, तो उनमें सलमान खान और अक्षय कुमार का नाम जरूर शामिल होगा। मौजूदा समय में सलमान अपने करियर के खराब दौर से गुजर रहे हैं। हाल ही में रिलीज होने वाली उनकी लेटेस्ट फिल्म सिकंदर फैंस की उम्मीदों पर

खरी नहीं उतर पाई है। जिसका जिम्मेदार सलमान खान की खराब एक्टिंग और फिल्म की बेकार कहानी को ठहराया जा रहा है। भाईजान की हो रही आलोचनाओं को लेकर अब उनके अजीज दोस्त अक्षय कुमार ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। इन दिनों सुपरस्टार अक्षय कुमार अपनी आने वाली फिल्म केसरी चैप्टर 2 को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। 15 अप्रैल को राजधानी दिल्ली में इस मूवी की स्पेशल स्क्रीनिंग भी रखी गई। इस दौरान हिंदुस्तान टाइम्स को दिए एक इंटरव्यू में अक्षय से सलमान खान की हो रही आलोचनाओं को लेकर सवाल पूछा गया कि सलमान जैसे बड़े सितारों की फिल्में आजकल नहीं चल रही हैं। जिस पर खिलाड़ी कुमार ने अपनी दो टूक राय रखी और कहा है–

देखिए ये गलत बात है, ऐसा हो ही नहीं सकता। टाइगर जिंदा है और हमेशा रहेगा। सलमान उस नस्ल का टाइगर है, जो जिंदगी में कभी भी मर नहीं सकता। वह मेरा दोस्त है और हम हमेशा उसके साथ खड़े हैं। इस तरह से अक्षय ने सलमान खान को लेकर अपने दिल की बात कही है। बता दें कि सिकंदर के बॉक्स ऑफिस फेलियर को लेकर जाट मूवी एक्टर सनी देओल ने भी भाईजान के पक्ष में अपनी बात रखी थी और भविष्य में उनके स्ट्रान्ग कमबैक की उम्मीद जताई थी। ईद के मौके पर करीब 2 साल बाद सलमान खान ने फिल्म सिकंदर के जरिए वापसी की थी। माना जा रहा था कि बॉक्स ऑफिस पर साउथ सिनेमा के दिग्गज निर्देशक ए आर मुरूगादास की इस मूवी के जरिए सलमान कमाई के मामले में एक नया इतिहास रचेंगे। लेकिन दुर्भाग्यवश उनकी ये फिल्म घरेलू बॉक्स ऑफिस पर अभी तक अपना बजट तक नहीं निकाल पाई है। इस कारण भाईजान की खूब ट्रोलिंग हो रही है। लॉकडाउन के बाद से अगर सलमान खान का करियर ग्राफ उठा के देखा जाए तो सिर्फ टाइगर 3 के रूप में उनके पास एक मात्र सफल फिल्म है, इसके अलावा जितनी भी उनकी मूवी रिलीज हुई हैं, वे सब असफल साबित हुई हैं।

आतंक पर निर्णायक प्रहार का अवसर, तहव्वुर राणा यूरोप में भी आतंकी हमले की साजिश रच रहा था

मुंबई पर हुए भीषण आतंकी हमले के डेढ़ दशक बाद उसका एक मुख्य षड्यंत्रकारी तहव्वुर हुसैन राणा अंततः भारत के हाथ लग गया। पाकिस्तानी मूल के कनाडाई नागरिक राणा का हाल में अमेरिका से प्रत्यर्पण संभव हुआ है। यह मोदी सरकार की बड़ी कूटनीतिक जीत मानी जा रही है। राणा के गिरफ्त में आने के बाद कई रहस्यों से पर्दा उठने की उम्मीद जगी है। राणा की गिरफ्तारी पर जारी विज्ञप्ति में राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी एनआइए ने लश्कर–ए–तोइबा के साथ–साथ हरकत उल जिहाद–ए–इस्लामी को भी इन हमलों का साजिशकर्ता बताया है। पहले इन हमलों को अकेले लश्कर का काम समझा जाता रहा। राणा का भारत की गिरफ्त में आने का एक ऐतिहासिक पहलू और भी है। कनाडा की नागरिकता पाने से पहले वह पाकिस्तानी फौज की मेडिकल कोर में कैप्टन था। राणा का भाई भी पाकिस्तानी फौज में मनोविज्ञानी है। इस दृष्टिकोण से देखें तो राणा संभवतः पाकिस्तानी फौज से जुड़ा पहला ऐसा व्यक्ति है, जो जम्मू–कश्मीर से बाहर हुए किसी आतंकी हमले के मामले में भारत के हत्थे चढ़ा है। राणा और मुंबई हमले के मुख्य साजिशकर्ताओं में से एक पाकिस्तानी मूल का अमेरिकी नागरिक दाऊद गिलानी उर्फ डेविड कोलमैन हेडली लश्कर के साथ–साथ अलकायदा के आतंकी इलियास कश्मीरी के लिए भी काम कर रहे थे। इलियास भी राणा की तरह पाकिस्तानी फौज में रह चुका था। एक भारतीय सैनिक का सिर काटने पर जनरल परवेज मुशर्रफ ने उसे सम्मानित भी किया था। पाकिस्तान में बैठकर मुंबई हमले का संचालन करने वाला मेजर इकबाल भी पाकिस्तानी फौज का ही अफसर है। यह दर्शाता है कि खुद पाकिस्तान फौज न केवल आतंकी पैदा करने की फैक्ट्री है, बल्कि उसमें और लश्कर एवं जैश जैसे आतंकी संगठनों में कोई अंतर नहीं। यह उस आख्यान को ध्वस्त करता है, जो भारत में अमन की आशा ब्रिगेड और बालीवुड फिल्मों द्वारा प्रस्तुत किया जाता रहा है कि पाकिस्तान में आतंकी संगठन फौज की भी नहीं सुनते। अब राणा के जरिये भारत को पाकिस्तान प्रायोजित आतंक के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए। पाकिस्तान का भारत के विरुद्ध जिहादी आतंकवाद का उपयोग अब परोक्ष युद्ध का मामला नहीं रह जाता। 26/11 हमला पाकिस्तानी फौज द्वारा भारत पर सीधा हमला था, जिसमें पाकिस्तानी फौज के पूर्व और तत्कालीन सैन्य अधिकारियों की संलिप्तता थी। राणा और हेडली दोनों पाकिस्तानी फौज के हसन अब्दाल कैडेट कालेज में साथ ही पढ़े। उनका संबंध भी संपन्न परिवारों से रहा। हेडली के पिता राजनयिक रहे थे। दोनों का आतंकी बनना आतंकवाद की समस्या के पीछे अशिक्षा और गरीबी को कारण बताने वाले विमर्श की भी पोल खोलता है। राणा के क्रियाकलाप देखें तो वह आव्रजन एजेंसी संचालन के साथ–साथ अमेरिका में हलाल बूचड़खाना भी चलाता था। यह हलाल आर्थिकी और जिहादी आतंकवाद के बीच के संबंध को भी रेखांकित करता है। मुंबई हमले को लेकर भारत के भीतर से भी आतंकियों को सहायता मिलने का संदेह जताया जाता रहा, परंतु अभी तक इसके कोई साक्ष्य नहीं मिले थे, क्योंकि कोई मुख्य षड्यंत्रकारी पकड़ा नहीं गया था। अजमल कसाब तो एक प्यादा ही था। यह जांच का विषय है कि पाकिस्तानी फौज में काम कर चुका राणा जैसा व्यक्ति मुंबई में आव्रजन एजेंसी चलाने जैसा संवेदनशील उपक्रम कैसे शुरू कर सका?

यह सवाल इसलिए और संदेह पैदा करता है, क्योंकि मुंबई में हमला करने वाले आतंकियों ने हाथ में कलावा बांध रखा था और हमलों की जांच पूरी होने से पहले ही भारत में कथित सेक्युलर नेताओं ने इसके पीछे हिंदू संगठनों का हाथ बताना शुरू कर दिया था। क्या यह पहले से तैयार पटकथा के अनुसार हुआ था? अगर कसाब जिंदा न पकड़ा जाता तो मानकर चलिए कि इस पूरे आतंकी हमले का आरोप हिंदू संगठनों पर लगा दिया जाता। मुंबई हमले में अमेरिकी एजेंसियों की भूमिका भी कम संदिग्ध नहीं थी। राणा का साथी हेडली अमेरिका की एंटी–नारकोटिक्स एजेंसी डीईए का मुखबिर रहा था। 9/11 हमले के बाद अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने एक बार फिर हेडली की मदद पाकिस्तानी आतंकी संगठनों में खुफिया घुसपैठ के लिए चाही, परंतु वह उन्हीं आतंकी संगठनों के लिए काम करता रहा। उसने पाकिस्तान में आतंकी कैंपों के दौरे किए और आतंकी ट्रेनिंग भी ली। अब इसके पर्याप्त साक्ष्य सामने आ चुके हैं कि एक समय पर अमेरिकी खुफिया एजेंसियों को हेडली की इन आतंकी गतिविधियों की भनक लग चुकी थी और उसके फोन–ईमेल को भी उन्होंने निगरानी पर रखा था। यह सब जानते हुए भी अमेरिका ने इसकी सूचना भारतीय सुरक्षा एजेंसियों को नहीं दी और हेडली भारत के दौरे करता रहा। 26/11 हमला होने पर भी अमेरिकी सरकार ने चुप्पी साधे रखी। हेडली को इस हद तक संरक्षण प्राप्त था कि उसकी पत्नी ने भी आतंकी गतिविधियों में उसकी संलिप्तता की सूचना अमेरिकी एजेंसियों को दी, फिर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। जब राणा, हेडली और लश्कर ने डेनमार्क में आतंकी हमलों की साजिश रची, तब उन्हें हमले से पहले ही अमेरिकी एजेंसियों ने धर दबोचा। ऐसा मुंबई हमले से पहले भी किया जा सकता था, परंतु संभवतः अश्वेत भारतीयों की जिंदगियों की कीमत अमेरिकी सरकार की नजर में उतनी नहीं थी, जितनी डेनमार्क के नागरिकों की। अमेरिका द्वारा सब कुछ जानते हुए भी मुंबई के आरोपितों को लेकर उसकी हीलाहवाली सालने वाली थी। अब राष्ट्रपति ट्रंप ने पिछली सरकारों की नीति को पलटते हुए राणा को सौंपकर भारत की नाराजगी दूर करने की कोशिश की है, पर इस मामले में न्याय तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हेडली को भी अमेरिका भारत के हवाले नहीं कर देता। चूंकि राणा पर यूरोप में भी आतंकी हमलों की साजिश रचने का आरोप रहा है, इसलिए पूरे विश्व की निगाहें इस मामले की कानूनी कार्रवाई पर होंगी। यह भारतीय न्याय व्यवस्था की सक्षमता की भी परीक्षा है। सरकार को ध्यान देना होगा कि राणा भारत में दंड प्रक्रिया कानूनों में आए बदलावों से उपजी किसी पेचीदगी का लाभ न उठा पाए।

सुनील नरेन ने अपने नाम किया बड़ा रिकॉर्ड, किसी एक टीम के खिलाफ किया ये कमाल

आईपीएल 2025 का 31वां मुकाबला पंजाब किंग्स और केकेआर के बीच खेला जा रहा है। मुल्लांपुर के महाराजा यादवेंद्र सिंह इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले जा रहे इस मुकाबले में केकेआर के स्पिन गेंदबाज सुनील नरेन ने एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम किया है। सुनील नरेन ने इस मैच में बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए तीन ओवरों में केवल 14 रन खर्च करते हुए दो विकेट हासिल किए। नरेन ने युवा ऑलराउंडर सुयांश शेडगे को विकेटकीपर क्विंटन डिकॉक के हाथों कैच आउट कराया। वहीं मार्को यानसेन को क्लीन बोल्ड कर पवेलियन भेजा। इन दो विकेटों के साथ नरेन आईपीएल में किसी एक टीम के खिलाफ सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्ट में टॉप पर पहुंच गए हैं। सुनील नरेन ने पंजाब किंग्स के खिलाफ अब तक 36 विकेट लिए हैं। उनका पंजाब के खिलाफ प्रदर्शन लगातार प्रभावशाली रहा है, जहां वे नई गेंद से भी आक्रामण करते हैं और मिडिल ओवर्स में भी किफायती साबित होते हैं। इसके अलावा, तेज गेंदबाज उमेश यादव ने भी पंजाब किंग्स के खिलाफ 35 विकेट झटके हैं। ड्वेन ब्रावो और मोहित शर्मा जैसे गेंदबाजों ने मुंबई इंडियंस जैसे मजबूत बल्लेबाजी लाइनअप के खिलाफ 33–33 विकेट हासिल किए हैं। ब्रावो की डेथ ओवर्स में गेंदबाजी और मोहित की लेंथ गेंदबाजी मुंबई के खिलाफ कारगर रही है। वहीं युजवेंद्र चहल और भुवनेश्वर कुमार भी लगातार एक खास टीम के खिलाफ विकेट निकालते आए हैं। चहल ने गुगली और फ्लाइटेड गेंदों की मदद से पंजाब किंग्स के खिलाफ बल्लेबाजों को परेशान किया है, जबकि भुवी की स्विंग ने केकेआर के बल्लेबाजों को बार–बार मात दी है। दोनों ने 32–32 विकेट लिए हैं। वहीं, लसिथ मलिंगा, जिन्हें आईपीएल का डेथ ओवर स्पेशलिस्ट कहा जाता है, ने चेन्नई सुपर किंग्स जैसे मजबूत बैटिंग लाइनअप के खिलाफ 31 विकेट झटके हैं। वहीं अमित मिश्रा ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ 31 विकेट लिए हैं।

Grok इंटरनेट की दुनियाँ का सर्वाधिक रहस्यमय स्वरूप प्रस्तुत करता दिख रहा है

इसके पहले लोग हर प्रश्न का प्रामाणिक जवाब गूगल बाबा से पूँछने में पूरी सुविधा समझते और भरोसा करते थे,

Googal भी अपने भीतर की ढेर सारी संग्रहित सामग्री से छाँट कर आपको जिज्ञासा शान्ति उपलब्ध कराता है, वही काम अब Grok भी कर रहा है, हाँ कुछ विकसित तो हुआ है.. यह बहस भी कर सकता है.. काल्पनिक उत्तर भी दे सकता है, हाजिर जवाब तो खैर है ही.. बहुत सारे निर्देशों को मानते यथा सामर्थ्य काम भी करते रहने की क्षमता रखता है.. शायद कुछ दिनों बाद आपके मस्तिष्क की तरंगों को पढ़ने की सामर्थ्य भी इसके पास आ जाये..

तब तो इसकी सेवाओं का अंदाज लगाना भी मुश्किल हो जायेगा..

".. राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता.. "

वाली तर्ज पर यह आपके सोचते ही काम पर लग जायेगा. .प्रतिक्रिया देने लगेगा और फिर इसके सामने "मुँह में राम बगल में छूरी" रखने वालों के लिए आफत खड़ी हों जाएगी,

इससे पूंछते ही यह किसी के भी मन की सारी बातें खोल कर रख देगा..

इसका चलन हो सकता है व्यवसायिक रूप से मानव संसाधनों के खर्च में भारी कटौती के रूप में देखा जाये, तमाम व्यवसायिक प्रतिष्ठान और सरकारें भी अपनी प्रगति का प्रतीक मान इस Grok के अत्यधिक उन्नत संस्करण हेतु सम्भव है अपनी अधिकतम ऊर्जा, संसाधन इसके विकास में झोंक दें परन्तु फिर भी यह जीवित हाड़ – मांस के मनुष्य से बेहतर. . विश्वसनीय.. संवेदनशील नहीं बन सकता ..

यह कभी भी मनुष्य का विकल्प न है.. न हो सकेगा..

शायद सोचा भी नहीं जा सकता इतनी अकल्पनीय क्षति पहुंचाएगी सम्पूर्ण संसार को इस AI और Grok की लगातार होती प्रगति और उसपर बढ़ती निर्भरता..

कभी सोच कर देखें.. कितने सारे मनुष्यों के चल रहे रोजी – रोजगार को हानि होगी..?

जो प्रखर युवा बुद्धि शिक्षा – स्वास्थ्य – समाज सुधार – राष्ट्र निर्माण में लगती,

वह इन इंटरनेट मीडिया पर सामग्री जुटाने वाले – बेचने वाले – अपनी इच्छानुसार संसार के अधिकतम संसाधनों पर कब्जा करने वालों की घृणित इच्छा पूर्ति में लग कर..अनजाने ही समस्त सृष्टि को नाश की घर ले जाने का साधन बनती जा रही है..

क्योंकि यह तो निश्चित ही है कि इस प्रकार के संयत्रो को निर्देश कोई व्यक्ति ही देगा.. कोई युवा उस तकनीक का शोध करेगा और किसी के लिए उसका स्विच बनाएगा,अब सारा कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि उसकी नीति – नियत – दृष्टिकोण किसके प्रति सहज रूप में कैसी है, संसार के प्रति दृष्टिकोण कैसा है व्यक्तिगत रूप से उसका स्वभाव.. रूचि.. संस्कार.. कार्य की दिशा कैसी है..

सारा कुछ इसी पर निर्भर हो कर रह जायेगा.. वह व्यक्ति / समूह किस तरह की सोच के साथ इनके विकास हेतु तत्पर हैं.. अधिकतर दिखाया, बताया यही जाता है कि यह सब मानव मात्र के कल्याण हेतु किया जा रहा है.. राजनीति , धर्म , विज्ञान सब इसी घोषित लक्ष्य के आधार पर आगे बढ़ते कब मानव संहार की दिशा में बढ चलते हैं.. यह पता ही नहीं चल पाता.. सामान्य जन तो इस प्रकार के नवाचारों से उपलब्ध सुविधा में ही मगन रहते हैं, उन्हें इसके आगामी परिणामो के बारे में सोचना ही नहीं रहता, न वे कुछ कर पाने की सामर्थ्य रखते हैं..

कर पाने की सामर्थ्य तो प्रबुद्ध विचारक भी नहीं रखते लेकिन वे जन जागरण करते नकाब के पीछे छिपे चेहरों की पहचान जरूर करा सकते हैं इसीलिए प्रबुद्ध जनों से संसार अपेक्षा करता है कि वे सृष्टि पर आसन्न खतरों के प्रति आम जन मानस को जागृत करें – बताएं

आपको यह सोच समझ सकने की क्षमता इसी उद्देश्यपूर्ति हेतु प्रभु ने प्रदान की है.. यदि इसका समय पर उपयोग नहीं हुआ तो जहाँ एक घ्र समयावधि के पूरा होते ही सारी क्षमतायें समाप्त हो जायेंगी वहीं दूसरी घ्र हम सब..जाने अनजाने.. इन संसार पर प्रभुत्व करने का षड्यंत्र करने वालों के सहायक की भूमिका में दिखेंगे. . इस हेतु इतिहास भी किसी को कभी माफ़ नहीं करेगा..

श्रीहरि वाणी
92/143 संजय गाँधी नगर,
नौबस्ता, कानपुर –21
मो. 9450144500

श्री रामायण जी का एक अदभुत प्रेरणादायक प्रसंग

एक दिन संध्या के समय सरयू के तट पर तीनों भाइयों संग टहलते हुए श्रीराम से महात्मा भरत ने कहा, "एक बात पूछूं

भईया ? अनुमति मिलने पर पूछा, माता कैकई ने आपको वनवास दिलाने के लिए मंथरा के साथ मिलकर जो षड्यंत्र किया था, क्या वह राजद्रोह नहीं था ? उनके षड्यंत्र के कारण एक ओर राज्य के भावी महाराज एवं महारानी को चौदह वर्ष का वनवास झेलना पड़ा, तो दूसरी ओर पिता महाराज की दुःखद मृत्यु हुई। ऐसे षड्यंत्र के लिए सामान्य नियमों के अनुसार तो मृत्युदंड दिया जाता है, फिर आपने माता कैकई को दण्ड क्यों नहीं दिया ?

राम मुस्कुराए और बोले, "जानते हो भरत, किसी कुल में यदि कोई चरित्रवान तथा धर्मपरायण पुत्र जन्म ले ले, तो उसका जीवन उसके असँख्य पीढ़ी के पितरों के अपराधों का प्रायश्चित कर देता है। जिस माँ ने तुम जैसे महात्मा को जन्म दिया हो, उसे दण्ड कैसे दिया जा सकता है ?"

भरत संतुष्ट नहीं हुए। कहा, "यह तो मोह है भईया, और राजा का दण्डाविधान तो मोह से मुक्त होता है। एक राजा की तरह उत्तर दीजिये, कि आपने माता को दण्ड क्यों नहीं दिया ? समझिए कि आपसे यह प्रश्न आपका अनुज नहीं, अयोध्या का एक सामान्य नागरिक कर रहा है।

राम गम्भीर हो गए। कुछ क्षण के मौन के पश्चात कहने लगे, "अपने सगे–सम्बन्धियों के किसी अपराध पर कोई दण्ड न देना ही इस सृष्टि का कठोरतम दण्ड है भाई ! माता कैकई ने अपनी एक भूल का बड़ा कठोर दण्ड भोगा है। वनवास के चौदह वर्षों में हम चारों भाई अपने अपने स्थान पर परिस्थितियों से लड़ते रहे हैं, परन्तु माता कैकई हर क्षण मरती रही हैं।

अपनी एक भूल के कारण उन्होंने अपना पति खोया, अपने चार बेटे खोए, अपना समस्त सुख खोया, फिर भी वे उस अपराधबोध से कभी मुक्त न हो सकीं। वनवास समाप्त हो गया, तो परिवार के शेष सदस्य प्रसन्न तथा सुखी हो गए, पर वे कभी प्रसन्न न हो सकीं। कोई राजा किसी स्त्री को इससे कठोर दण्ड क्या दे सकता है ? मैं तो सदैव यह सोच कर दुखी हो जाता हूँ, कि मेरे कारण अनायास ही मेरी माता को इतना कठोर दण्ड भोगना पड़ा।"

राम के नेत्रों में जल भर आया था, और भरत आदि सब भाई मौन हो गए। राम ने फिर कहा,"और उनकी भूल को अपराध समझना ही क्यों भरत ! यदि मेरा वनवास न हुआ होता, तो संसार भरत तथा लक्ष्मण जैसे भाईयों के अतुल्य भ्रातृप्रेम को कैसे देख पाता ! मैंने तो मात्र अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन किया था, परन्तु तुम दोनों ने तो मेरे स्नेह में चौदह वर्ष का वनवास भोगा। वनवास न होता, तो यह संसार कैसे सीख पाता, कि भाईयों का सम्बन्ध कैसा होता है !"

भरत के प्रश्न मौन हो गए थे। वे अनायास ही बड़े भाई से लिपट गए।

सोशल मीडिया प्रभावक अंजलि कुमारी को आदर्श युवा नारी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा.

गयाः जिला के नई गोदाम निवासी सवर्गीयय जीतू सिंह की पुत्री अंजलि कुमारी को आदर्श युवा मिशन मानव कल्याण भारत का दौरा आदर्श युवा नारी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा ! महिलाओं और लड़कियों को वह हमेसा प्रेरित करती है जिसके कारण यह अवॉर्ड से उन्हें सम्मानित किया जा रहा है ! सोशल मीडिया ऐप इंस्टाग्राम पर इनके एक लाख 88 हजार फ़ॉलोअर्स है! गया और बिहार के लाखो लोग इनके दौरा बनाये गए वीडियो को पसंद करते है ! अंजलि अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज गया की बी.ए की द्वितीया वर्ष की विद्यार्थी है ! काफी कम आयु में समाज के बीच अलग पहचान बनाई गई है इनके दौरा! एचएएल ही के दिनों में राजवीर इवेंट के द्वार छमा छम वाटर पार्क बोधगया में इवेंट के दौरन

गया की सबसे अच्छी इंफ्लुएंसर के तौर पर सम्मान दिया गया था! अंजलि के द्वार समाज में महिला सशक्तिकरण की मिसाल पेश की गई है जिनके कारण इनको आदर्श युवा मिशन मानव कल्याण भारत के द्वार यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा! आदर्श युवा मिशन के सेंट्रल पैनल द्वारा निर्णय लिया गया है की सितंबर के महीने में होने वाले राष्ट्रिय वैश्विक शांति और मानव हितैषी सबमिट 2025 के इवेंट कार्यक्रम में उन्हें सम्मान दिया जाएगा! उक्त जानकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष दीपक कुमार सिंह और मीडिया प्रभारी आकाश प्रियदर्शी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी!

कामन में हनुमान जन्मोत्सव शोभायात्रा व कवि सम्मेलन सम्पन्न

हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर वसई पूर्व में भव्य शोभायात्रा व कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। रविवार सुबह ११.०० बजे कोल्ही गांव के गांवदेवी मंदिर से रामभक्तों का विशाल जनसमूह भजन भाव के साथ भगवा ध्वज फहराते हुए सात

किलोमीटर लंबे यात्रा पर मार्ग पर जयकारों की गूंज करते हुए कामन स्थित श्रीराम मंदिर पहूंचे जहां श्री राम सेवा समिति की ओर से महाप्रसाद के बाद कवि सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित था। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सदाशिव चतुर्वेदी "मधुर" जी ने किया तथा संचालन उमेश मिश्र "प्रभाकर" ने किया। युवा ओज कवि राजेश "अल्हड़ असरदार" के संयोजन में डॉ. मृदुल "महक", अन्नपूर्णा "सरगम" रामकृष्ण गुप्ता ने उपस्थित जनसमूह को कविताओं का रसपान कराया। अतिथियों में श्री दिनेश म्हात्रे, श्री जीत सिंह, श्री सुनील मिश्रा, श्री बाला सकपाल आदि राजनेताओं के साथ श्री राम सेवा समिति के अध्यक्ष श्री फूलचंद जी प्रजापति उपस्थित रहे।

यात्रा का आयोजन सकल हिंदू समाज के प्रमोद मिश्रा, अश्विन कुमार, शिवम यादव, विमलेश दुबे, दिनेश विश्वकर्मा, निलेश दुबे, बिपिन पांडे, आकाश हजारे, राहुल दुबे, निशांत भुसाले व रतन पटेल द्वारा किया गया। सभी कवियों व अतिथियों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया। भीषण गर्मी में भी हजारों की संख्या में रामभक्त महिला पुरूष व बच्चों ने यात्रा में सहभाग लिया। सात किलोमीटर लंबे यात्रा मार्ग पर जगह जगह पर पानी व शरबत की व्यवस्था स्थानीय व्यवसायिकों ने व ग्राम वासियों ने किया था। राजेश दुबे ने सभी का आभार व्यक्त किया।

शेयर मार्किट में निवेश करने वालों के लिए अच्छी खबर, आने वाले दिनों में हो सकती है बंपर कमाई

मुंबई। वैश्विक बाजारों में उतार–चढ़ाव के बीच निफ्टी अगले 12 महीने में 25,521 के स्तर को छू सकता है। यह जानकारी सोमवार को जारी हुई एक रिपोर्ट में दी गई। वित्तीय सर्विसेज फर्म पीएल कैपिटल ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि छोटी अवधि में हॉस्पिटल, फार्मा, रिटेल, एफएमसीजी, बैंकों, डिफेंस और पावर सेक्टर लीड कर सकते हैं। ब्रोकरेज फर्म ने कहा कि नया अनुमान पहले के अनुमान 25,689 से कम है। ब्रोकरेज फर्म को भारत की लंबी अवधि की स्टोरी में विश्वास है और हम उम्मीद करते हैं कि प्रमुख सेक्टर बाजार को मजबूती और सपोर्ट प्रदान करेंगे। पीएल कैपिटल ने रिपोर्ट में कहा कि मजबूत घरेलू संकेतों और नीतिगत सुधारों के समर्थन के कारण वैश्विक झटकों से बाजार उभरने में सफल रहेगा और वृद्धि दर मजबूत रहेगी। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि तेजी की स्थिति में इंडेक्स 27,590 और उम्मीद से कम तेजी की स्थिति में इंडेक्स 24,831 तक पहुंच सकता है। 2025 में अब तक निफ्टी में 3.8 प्रतिशत की मामूली गिरावट देखने को मिली है। इसकी वजह वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता बढ़ना और अमेरिका–चीन के बीच ट्रेड वार बढ़ना है।

निकट भविष्य में, रिपोर्ट में उम्मीद जताई गई है कि घरेलू अर्थव्यवस्था पर केंद्रित क्षेत्र बेहतर प्रदर्शन करेंगे। रिपोर्ट में कहा गया है, इनमें हॉस्पिटल, घरेलू फार्मा, रिटेल, चुनिंदा एफएमसीजी कंपनियां, बैंक, डिफेंस और बिजली शामिल हैं। आईटी, सीमेंट, कैपिटल गुड्स और कंज्यूमर बिजनेस जैसे क्षेत्रों में भी स्थिर वृद्धि बने रहने का अनुमान है, क्योंकि कंपनियां बदलते माहौल के अनुकूल खुद को ढालना जारी रखेंगी। रिपोर्ट में बताया गया है, वस्तुओं की कीमतों में उतार–चढ़ाव, विशेष रूप से कच्चे तेल की कीमतों में बदलाव, कुछ क्षेत्रों के लिए अल्पकालिक चुनौतियां पैदा कर सकता है। वैश्विक मोर्चे पर, भारत द्वारा यूएसए के साथ एक व्यापार समझौता करने की उम्मीद है, जिसमें ऑटो, कंज्यूमर गुड्स, डिफेंस, तेल और गैस, शराब और टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक डेवलपमेंट हो सकता है।

कुछ बड़ा होने वाला है? अमेरिका ने पश्चिम एशिया में दूसरा विमानवाहक पोत भेजा, यहां होगी तैनाती

दुबई। अमेरिका ने पश्चिम एशिया में दूसरा विमानवाहक पोत भेज दिया है। उसने ईरान के साथ दूसरे दौर की वार्ता से पहले यह कदम उठाया है। ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर दोनों पक्षों में शनिवार को ओमान की राजधानी मस्कट में पहले दौर की वार्ता हुई। वार्ता सकारात्मक बताई गई थी। अब वाशिंगटन और तेहरान के बीच दूसरे दौर की वार्ता रोम में हो सकती है। अमेरिकी विमानवाहक पोत यूएसएस कार्ल विंसन को अरब सागर में तैनात किया गया है। इस क्षेत्र में पहले से ही यूएसएस ट्रूमैन तैनात है। इस क्षेत्र में अमेरिकी सेना यमन में ईरान समर्थित हाउती विद्रोहियों को निशाना बना रही है। अमेरिका के इस कदम को ईरान पर दबाव बनाने के रूप में देखा जा रहा है। मस्कट में पहले दौर की वार्ता के बाद अमेरिका और ईरान के बीच दूसरे दौर की वार्ता को लेकर सहमति बनी थी। यह संभावना है कि दोनों पक्षों में 19 अप्रैल को फिर वार्ता हो सकती है। ओमान लंबे समय से पश्चिमी देशों और ईरान के बीच मध्यस्थता कर रहा है। ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामनेई ने वार्ता का समर्थन किया और कहा कि अमेरिका के साथ पहले दौर की वार्ता अच्छी रही। उन्होंने ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु वार्ता पर पहली बार सार्वजनिक टिप्पणी में यह बात कही।

"स्वर्गीय श्री. वैद्य मोरेश्वर वैद्य सर यांची सातवी पुण्यतिथी संपन्न"

श्री नरसिंह के दुबे चॅरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित नालासोपारा आयुर्वेद मेडिकल कॉलेजमध्ये, संस्थेचे संस्थापक अध्यक्ष आणि संस्थापक प्राचार्य, आयुर्वेदाशी संबंधित अनेक पुस्तकांचे लेखक, परमपूज्य वैद्यराज दिवंगत श्री मोरेश्वर वैद्य सर यांच्या "सातव्या पुण्यतिथी" निमित्त व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले होते। कार्यक्रमाची सुरुवात दीपप्रज्वलन, धन्वंतरी पूजन आणि वैद्य सरांच्या प्रतिमेला पुष्पहार अर्पण करून झाली. संस्कृत संहिता विभागाच्या प्रमुख डॉ. शुभांगी पाटील यांनी कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक केले . डॉ. सर्वेश शर्मा यांनी वक्ते, प्रख्यात आयुर्वेद तज्ज्ञ (मुंबई) वैद्य संतोष देशमुख यांचा परिचय करून दिला. त्यानंतर, Challenging and Successful cases Treated and Managed by Ayurveda या विषयावर त्यांचे व्याख्यान संपन्न झाले . ज्यामध्ये त्यांनी उपस्थित सर्वांसमोर आयुर्वेदानुसार अनेक जुनाट आजारांवर उपचार करण्याचा अनुभव मांडला, ज्याचा सर्व वैद्यकीय विद्यार्थी, शिक्षक आणि वैद्यांना खूप फायदा झाला. संस्थेच्या विश्वस्त डॉ. ऋजुता ओमप्रकाश दुबे यांनी वैद्य सरांची महानता तसेच विद्वत्ता आणि ह्या महाविद्यालयाच्या उभारणीत त्यांनी कसे योगदान दिले आहे याबद्दल सांगितले. या कार्यक्रमात महाविद्यालयाच्या प्राचार्या डॉ. हेमलता शेंडे, महाविद्यालयातील सर्व शिक्षक आणि विद्यार्थी उपस्थित होते. शेवटी, संहिता विभागाच्या व्याख्याता डॉ. प्रीती माने यांनी आभार व्यक्त केले. अल्पोपहाराने कार्यक्रमाची सांगता झाली.

डॉ.ओमप्रकाश दुबे.
डायरेक्टर
नालासोपारा आयुर्वेद
मेडिकल कॉलेज

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक
पूजा प्रसाद पाण्डेय
मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377
Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।

सोच अच्छी ख़बर सच्ची